होली की हार्दिक शुभकामनाएं

खेती री बातां

वर्ष–15 अंक–3 मासिक पत्रिका आर.एन.आई – 70296/98 5 मार्च 2012 वार्षिक शुल्क –12 रूपये

कृषि एवं कृषक सदैव हमारी प्राथमिकताओं में शामिल – मुख्यमंत्री

जयपुर, 18 फरवरी। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने शासन सचिवालय के कॉफ्रेन्स–हॉल में किसानों एवं उपनिवेशन सिंचित क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ बजट पूर्व बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि कृषि और कृषक सदैव हमारी प्राथमिकताओं में रहेंगे और इसी उद्देश्य से राज्य के आने वाले बजट से पूर्व हम किसानों से महत्वपूर्ण सुझाव ले रहे हैं जिससे कृषि, कृषक एवं इससे जुड़े क्षेत्र और अधिक पनप सकें।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने किसानों को 5 वर्ष तक बिजली की दरें नहीं बढ़ाने का वायदा किया था इसके तहत बढ़ी हुई बिजली की दरों के पेटे राज्य सरकार प्रतिवर्ष 1200 करोड़ रूपये दे रही है। प्रदेश में बिजली का उत्पादन बढ़ाने के प्रयास निरन्तर जारी हैं। कृषि के लिए सोलर पम्प उपयोग की एक नीति तैयार की गयी है जिसके तहत इस वर्ष 16 जिलों में 100 करोड़ रूपये की लागत से 1600 सोलर पम्प सेट लगाने का वृहद् कदम उठाया गया है।

श्री गहलोत ने कहा कि हाल ही में राष्ट्रपति की अध्यक्षता में नई दिल्ली में आयोजित कार्यशाला में हमने कृषि विकास एवं किसान हित के मुद्दों को प्रमुखता से रखा है।

कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क ने बैठक में कृषक प्रतिनिधियों से कहा कि वे सरकार व कृषकों के बीच महत्वपूर्ण कड़ी हैं। उन्होंने कहा कि राज्य के कृषक प्रतिनिधियों को चाहिए कि वे नई योजनाओं व सरकार की नीतियों का ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा से ज्यादा प्रचार–प्रसार करें।

बैठक में राज्य के विभिन्न जिलों से आये कृषक प्रतिनिधियों ने सुझाव दिये जिसमें प्रमुख रूप से जलग्रहण क्षेत्र को प्राथमिकता देने, बूंद–बूंद सिंचाई उपकरणों की गुणवत्ता पर ध्यान देने की आवश्यकता जताई। इसके साथ ही कृषक प्रतिनिधियों ने रासायनिक खाद के समय पर उपलब्ध कराने की आवश्यकता के साथ–साथ समर्थन मूल्य समय पर घोषित करने, बगीचों में उत्पादित वस्तुओं का उचित मूल्य दिलाने, बीज उत्पादन के लिए आंध्र प्रदेश पैटर्न अपनाने, सौर ऊर्जा में राज्य के सभी जिले सम्मिलित करने, पाले को प्राकृतिक आपदा में शामिल करने, कृषकों को पूरी बिजली देने, कृषि को उद्योग का दर्जा

(शेष पृष्ठ 3 पर.....)

किसान कम पानी में अधिक उपज देने वाली फसलें उगाएं

जयपुर, 21 फरवरी। कृषि व पशुपालन मंत्री श्री हरजी राम बुरड़क ने बीकानेर जिले की श्रीडूंगरगढ़ पंचायत समिति भवन परिसर में मृदा परीक्षण प्रयोगशाला के उद्घाटन समारोह व किसान मेले में जिले के विभिन्न स्थानों से आए किसानों को सम्बोधित किया।

श्री बुरड़क ने कहा कि किसान पानी की बचत करें तथा कम पानी में अधिक अपज देने वाली फसलों को उगाएं। पानी की बचत करने एवं सिंचाई क्षेत्र को बढ़ाने के लिए फव्वारा, ड्रिप व पाइप लाइन का इस्तेमाल करें।

उन्होंने कहा कि मृदा परीक्षण प्रयोगशाला से किसान अपने खेत की मिट्टी की जांच करवाकर मृदा की पोषक क्षमता, प्रयुक्त पोषक तत्वों से फसलों की अनुक्रिया एवं समस्याग्रस्त भूमि के लिए सुधारकों की आवश्यकता आसानी से ज्ञात कर सकेंगे।

उन्होंने बताया कि राज्य में 14 प्रयोगशालाओं के भवन निर्माण के लिए धनराशि राज्य योजना मद में स्वीकृत की गई है तथा इनका निर्माण राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड के माध्यम से करवाया गया है।

प्रयोगशालाओं का संचालन निजी क्षेत्र के सहयोग से मरूभूमि विकास संस्थान के माध्यम से पी.पी.पी. मोड से किया जा रहा है। इसी योजना में तीन नई उर्वरक परीक्षण प्रयोगशालाएं भी चालू की जा रही हैं।

राज्य में मिट्टी परीक्षण के आधार पर सभी खेतों के मृदा स्वास्थ्य कार्ड कृषकों को चरणबद्ध तरीके से 2–3 वर्ष में उपलब्ध करवाए जाएंगे।

इजरायल अध्ययन भ्रमण दल की वापसी

जयपुर, 5 फरवरी। कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क के नेतृत्व में इजरायल गया 28 सदस्यीय दल इजरायल अध्ययन भ्रमण कार्यक्रम सम्पन्न कर जयपुर लौट आया।

दस दिवसीय अध्ययन भ्रमण कार्यक्रम के दौरान इजरायल में कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क ने कृषि मंत्री इजराइल सुश्री ओरिट नोकिट तथा महानिदेशक कृषि इजरायल श्री योसी (जोसफ) इकाय से भी मुलाकात की। मुलाकात के दौरान राज्य में खजूर, अनार एवं सन्तरे की खेती के तीन ''सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स'' की स्थापना के बारे में विस्तार से चर्चा की। इसमें निष्कर्ष यह रहा कि इन सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स में उत्पादन से लेकर फसलोत्तर प्रबन्धन, मूल्य संवर्धन, विपणन एवं निर्यात आदि समस्त पहलुओं का समावेश किया जायेगा।

इन्डो–इजरायल करार के तहत राज्य की ओर से प्रस्तावित तीन सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स की स्थापना तथा जैतून उत्पादन परियोजना में निरन्तर सहयोग

(शेष पृष्ठ 4 पर.....)

मत्स्य–विभाग की वेबसाइट का लोकार्पण

जयपुर, 13 फरवरी। कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क ने सचिवालय के मंत्रालयिक भवन स्थित उनके कक्ष में मत्स्य–विभाग की वेबसाइट **www.fisheriestest.rajasthan. gov. in** का लोकार्पण किया।

इस वेबसाइट पर मत्स्य–विभाग की विस्तृत जानकारी जिसमें विभागीय संगठन, विभागीय संसाधन, जलाशयों को लीज पर देने संबंधी सूचना, मत्स्य उत्पादन एवं मत्स्य बीज उत्पादन संबंधी सूचनाएं, मत्स्य अधिनियम एवं नियमों की जानकारी के साथ विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं को दर्शाया गया है।

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

bl vad esa——

www.krishi.rajasthan.gov.in

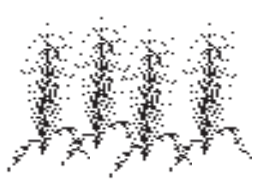

★ मार्च माह के कृषि कार्य
★ राजस्थान में जैतून.....
पृष्ठ 2

★ एक छोटा सा लेकिन अनुकरणीय प्रयास
★ भिण्डी की खेती.....
पृष्ठ 3

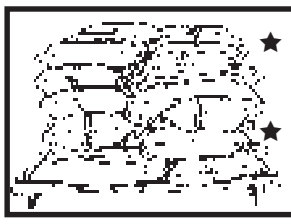

★ उपजाने के समान है,उपजे अनाज का सुरक्षित भंडारण.....
★ परख.....
पृष्ठ 4

दूरभाष – 5116240, 2227365/211

मार्च माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

★ अचानक तापमान वृद्धि की स्थिति में फसलों में यथा संभव हल्की सिंचाई थोड़े–थोड़े अन्तराल पर करें।

★ तेज हवा चलने पर गेहूँ, जौ आदि लम्बी बढ़ने वाली फसलों में हल्की सिंचाई करें।

★ गेहूँ व जौ में दाने की दूधिया अवस्था एवं दाना पकते समय सिंचाई अवश्य करें।

★ रबी फसलों की कटाई के तुरन्त बाद मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी ग्रीष्मकालीन जुताई करें। इससे खरपतवार, कीट एवं बीमारी के नियंत्रण में मदद मिलती है।

बागवानी

★ बेर की कटाई–छंटाई का उचित

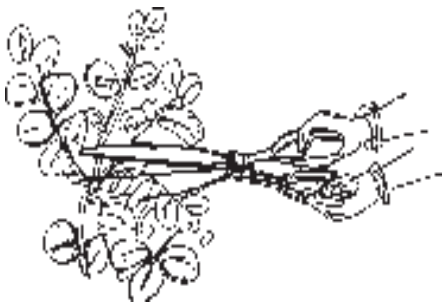

समय है। बेर में प्रतिवर्ष कटाई–छंटाई करनी चाहिए। क्योंकि इसकी कक्ष से जो नये प्ररोह निकलते हैं उन्हीं पर फूल व फल लगते हैं। कृन्तन द्वितीय शाखा तक करें। कृन्तन करते समय अनचाही रोगग्रस्त सूखी एवं आपस में रगड़ खाती टहनियों को हटा देवें।

★ नींबू में फल बनने की प्रक्रिया पूर्ण होने पर सिंचाई प्रारम्भ करें। सिंचाई के साथ यूरिया 325 ग्राम प्रति पौधे की दर से देवें। फल गिरने की समस्या होने पर 2–4, डी दवा की 1 ग्राम मात्रा 100 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

★ अनार में मृग बहार में फलन लेने हेतु मार्च से अप्रैल माह के अंत तक सिंचाई नहीं करें। वर्षा ऋतु वाली फसल में 7–10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करते रहें।

सब्जियॉ

★ बैंगन व मिर्च की पौध की रोपाई करें तथा ग्वार, चंवला व अन्य सब्जियों की बुवाई करें।

★ कुष्माण्ड कुल की सब्जियों में विषाणु रोग कुकुम्बर मोजेक वाइरस (सी.एम.वी.) व वाटर मेलन वाइरस (डब्ल्यू.एम.वी.) के प्रकोप की संभावना रहती है। इस रोग के प्रभाव से पत्तियां एवं फल बेडौल आकार के हो जाते हैं। रोग के प्रकोप के लक्षण दिखाई देते ही पौधों को उखाड़कर जला देवें तथा कीटनाशी दवा मेलाथियॉन 50 ई.सी. का डेढ़ मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

★ कुष्माण्ड कुल की सब्जियों में लाल भृंग कीट अंकुरित तथा नई पत्तियों को खाकर फसल को हानि पहुंचाता है। इसकी रोकथाम के लिए कार्बेरिल 5 प्रतिशत चूर्ण या मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से प्रातः या सायं भुरकाव करें।

★ बैंगन में फल व तना छेदक कीटों की रोकथाम के लिए एसीफेट 75 एस.पी. 1 किलोग्राम दवा प्रति हैक्टर की दर से 200–300 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

पुष्पोत्पादन

★ गैंदा (हजारा) की ग्रीष्मकालीन फसल में पौध रोपण के 30 दिन के पश्चात् प्रथम निराई–गुड़ाई करें। खड़ी फसल में यूरिया 125 किलो प्रति हैक्टर की दर से देकर सिंचाई करें। पौध रोपण के 40 दिनों पश्चात् पौधे की शीर्ष कलिका को तोड़ें।

★ गुलाब की निराई–गुड़ाई करें एवं सप्ताह में एक बार सिंचाई करें।

★ गर्मी वाले मौसमी फूलों जैसे पोर्चुलाका, जीनिया, सनफ्लावर, कॉसमॉस, सेलोसिया व बालसम के बीजों को एक मीटर चौड़ी तथा आवश्यकतानुसार लम्बाई की क्यारियां बनाकर बुवाई कर दें।

पशुपालन व दुग्ध उत्पादन

★ मार्च के अन्त में भेड़ों में ऊन कतरने से पहले भेड़ों की डिपिंग करायें जिससे ऊन साफ सुथरी प्राप्त होगी।

★ भेड़, बकरियों में फड़किया रोग से बचाव हेतु टीका लगवायें।

चारा फसलें

★ गर्मी में चारा उपलब्ध कराने के लिए इस समय मक्का, लोबिया तथा चरी की बुवाई का अच्छा समय है।

राजस्थान में जैतून : एक अभिनव पहल

★ राज्य के कृषि क्षेत्र को निर्यातोन्मुखी बनाने के लिए हाइटेक कृषि, फ्लोरीकल्चर, खजूर उत्पादन, सजावटी मछली उत्पादन, खारे पानी का उपयोग जैसी कई भावी तकनीक है। राज्य में जैतून की खेती इसी दिशा में उठाया गया एक कदम है।

★ राजस्थान राज्य में जैतून की खेती के सपने को साकार करने के लिए ''राजस्थान ओलिव कल्टीवेशन लिमिटेड'' कम्पनी का गठन किया गया है।

★ जैतून के फल में 20 प्रतिशत प्रोटीन, 14 प्रतिशत तेल, 4 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट व 650 कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। यह विटामिन बी, सी व ए का अच्छा स्त्रोत है। जैतून के तेल में मुक्त पॉली अनसेच्युरेटेड फैटी एसिड्स की प्रचुरता के कारण यह उच्च रक्तचाप का नियंत्रण करने व हृदय रोग से ग्रसित रोगियों के लिए अच्छा माना जाता है।

★ राज्य सरकार द्वारा प्रारम्भिक वर्षों में श्रीगंगानगर, बीकानेर, नागौर एवं हनुमानगढ़ जिलों में जैतून के उद्यान ''कलस्टर नवाचार कार्यक्रम'' के तहत विकसित किए जाएगें।

★ जैतून के नये क्षेत्र उद्यान विकसित करने हेतु राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में निम्नानुसार अनुदान देय है–

पौधों पर अनुदान–

बगीचों की स्थापना के लिए पौधों की कीमत का 75 प्रतिशत, अधिकतम राशि रूपये 44,625/– प्रति हैक्टर तक अनुदान देय है। कृषकों को कुल 523 पौधे प्रति हैक्टर दिए जायेंगे, कृषक हिस्सा राशि रूपये 15,520/– होगी।

पौध संरक्षण रसायन एवं उर्वरक पर अनुदान–

जैतून के उद्यानों के रखरखाव हेतु उर्वरक, पौध संरक्षण रसायन आदि पर राशि रूपये 3,000/– प्रति हैक्टर प्रति वर्ष की दर से तीन वर्षों तक अनुदान देय है।

जैतून के उद्यानों के संधारण के लिये तकनीकी सहायता पर अनुदान–कृषकों के खेतों पर जैतून के पायलट प्लान्टेशन स्थापित करने की तकनीकी जानकारी तीन वर्ष तक चयनित एजेंसी के माध्यम से उपलब्ध करवायी जायेगी जिसका समस्त व्यय राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के माध्यम से किया जायेगा।

★ माह फरवरी–मार्च, 2012 से कृषकों को जैतून के पौधों का वितरण किया जाना प्रस्तावित है।

★ कृषक हिस्सा राशि कृषकों के द्वारा संबंधित जिला कार्यालय अथवा हाई–टेक सेंटर, बस्सी, जयपुर पर जमा करवायी जायेगी।

★ प्रति कृषक अधिकतम 10 हैक्टर क्षेत्रफल के लिये अनुदान देय होगा।

★ अनुदान राशि प्रथम वर्ष जैतून के पौधों के क्रय के समय अनुमोदित नर्सरी को उपलब्ध करवायी जायेगी।

★ अनुदान राशि की गणना 523 पौधे प्रति हैक्टर के आधार पर की जायेगी। जैतून के उद्यान कतार से कतार की दूरी 7 मीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 3 मीटर ज्यामिति पर विकसित किये जायेंगे। 476 पौधे/हैक्टर के अतिरिक्त 10 प्रतिशत 47 पौधे मोर्टेलिटी एवं गैपफिलिंग के लिये दिये जायेंगे।

★ हाई डेन्सिटी प्लान्टेशन में पौधों पर अनुदान पौधों की संख्या के आधार पर उपलब्ध करवाया जायेगा, ना कि क्षेत्रफल के आधार पर।

★ जैतून के पौधे हाई–टेक एग्रो–होर्टी रिसर्च एण्ड डिमोन्सट्रेशन सेंटर, जयपुर के माध्यम से उपलब्ध कराये जायेंगे। सामान्यतः पौधे किसानों द्वारा ही लाये जायेंगे लेकिन यदि इसकी व्यवस्था हाई–टेक एग्रो–होर्टी रिसर्च एण्ड डिमोन्सट्रेशन सेंटर, जयपुर के द्वारा की जाती है तो वास्तविक व्यय की राशि किसानों द्वारा देय होगी।

★ सिंचाई व्यवस्था के लिये किसानों को ड्रिप सयंत्र की स्थापना अनिवार्य होगी। जिसके लिये अनुदान की प्रक्रिया उद्यान विभाग के देय अनुदान के अनुसार रहेगी।

★ जैतून की उन्नत कृषि तकनीक, अनुदान प्रक्रिया, पौध उपलब्धता के लिए आप राजस्थान ओलिव कल्टीवेशन लिमिटेड एम.बी.–93, बापू नगर, जयपुर दूरभाष नं. 0141–4006707 अथवा सहायक निदेशक उद्यान श्री गंगानगर, हनुमानगढ़, लाडनूं (नागौर), बीकानेर से सम्पर्क करें।

एक छोटा सा लेकिन अनुकरणीय प्रयास

सफल कृषक की कहानी

टोंक जिले से करीब 35 किलोमीटर दूर मालपुरा रोड़ पर एक छोटे से गांव अलियारी के कृषक सीताराम डांगी ने स्वयं की मेहनत व कृषि विभाग के सहयोग से यह साबित कर दिखाया है कि यदि कृषक आर्थिक उन्नति करना चाहता है, तो उसे कड़ी मेहनत के साथ–साथ बुद्धि बल को काम में लेना होगा।

इनके पास 8 बीघा जमीन थी जो कि अत्यन्त ऊसर, खराब दशा में तथा कई वर्षों से बंजर पड़ी थी। यहां कांटों के झाड़, विलायती बबूल एवं खरपतवारों के अलावा कुछ नहीं दिखाई देता था। सीताराम ने अपनी जमीन की ये हालत देख कर जमीन को बेचकर कहीं दूसरी जगह खेती योग्य जमीन खरीदने की सोची, परन्तु उन्हें निराशा ही हाथ लगी। काफी प्रयत्न करने के बाद भी उन्हें अपनी इस ऊसर व बंजर जमीन का कोई खरीददार नहीं मिला।

सीताराम ने लगभग हार मान ली थी, उन्होंने अपनी जमीन की तरफ ध्यान देना ही छोड़ दिया था। वर्ष 2008 में कोटा शहर में लगने वाले दशहरा मेले में सीताराम की उम्मीद की किरण जागी, मेले में उपस्थित कृषि अधिकारियों से विचार–विमर्श कर सीता राम ने ठान लिया कि उन्हें अपनी इस ऊसर एवं बंजर पड़ी भूमि को खेती योग्य बनाना है। उन्होंने मेले में कृषि विभाग की स्टॉल से कृषि साहित्य लिया, दूरदर्शन पर आने वाले कृषि कार्यक्रमों को लगातार देखना शुरू किया और अपनी समस्या का समाधान ढूंढने लगा।

सीताराम ने सबसे पहले अपने बंजर पड़े खेत की साफ–सफाई की तथा गर्मी की गहरी जुताई की। जून माह में पहली बारिश आने से पहले ही उन्होंने अपने नजदीकी कृषि कार्यालय के सहयोग से हरी खाद के लिए 60 किलोग्राम ढेंचा के बीज (60 किलो बीज प्रति हैक्टर की दर से) की व्यवस्था की। पहली बारिश होने पर उन्होंने ढेंचा की बुवाई की। ढेंचा की फसल में फूल आने से पहले (50–60 दिन की अवस्था पर) फसल को ट्रेक्टर से हल चलाकर मिट्टी में दबा दिया। कुछ महीनों बाद खेत में पॉच–छः जगह से मिट्टी का नमूना लेकर कृषि पर्यवेक्षक की सहायता से मृदा परीक्षण प्रयोगशाला के लिए भिजवाया। मृदा स्वास्थ्य कार्ड में दी गई सिफारिश अनुसार पूरे खेत में जिप्सम डाली। साथ ही अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद भी खेत में डाली।

आज सीतराम की उस ऊसर एवं बंजर पड़ी जमीन की सूरत ही बदल गई, एक समय जिस खेत में सिर्फ झाड़ियॉ, बबूल, खरपतवार एवं मवेशी पशु चरते हुए दिखाई देते थे आज वहॉ लहलहाती फसलें देख मन खुश हो जाता है। इस वर्ष रबी में सीताराम ने अपने खेत में सरसों व जौ की बुवाई की है।

इस प्रकार सीताराम की लगन व मेहनत तथा कृषि विभाग के सहायोग से ऊसर व बंजर भूमि धीरे–धीरे अच्छी पैदावार देने वाली भूमि बनती जा रही है।

सीताराम का पता है :–

श्री सीताराम डांगी, s/o श्री भंवर लाल बारेठ, गांव पोस्ट–अलियारी, तहसील–टोडारायसिंह, जिला–टोंक
मो.नं. 9610287987

भिण्डी की खेती

ग्रीष्मकालीन सब्जियों में भिण्डी का महत्वपूर्ण स्थान है। भिण्डी के अच्छे अंकुरण के लिये तापमान 20 डिग्री सेन्टीग्रेड से अधिक होना चाहिये।

उन्नत किस्में

पूसा सावनी, पूसा मखमली, परभनी क्रान्ति, अर्का अभय व अर्का अनामिका, (ये किस्में विषाणु रोगरोधी हैं।)

खाद एवं उर्वरक

खेत तैयार करते समय अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 15 से 20 क्विंटल प्रति हैक्टर की दर से भूमि में मिला देवें। इसके अलावा 35 किलो यूरिया, 60 किलो डी0ए0पी0, 60 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश बुवाई के पूर्व प्रति हैक्टर की दर से देवें। शेष 60 किलो यूरिया बुवाई के एक माह बाद खड़ी फसल में देवें।

बीज एवं बुवाई

गर्मी की फसल के लिये 20 किलोग्राम तथा वर्षा की फसल के लिये 12 किलोग्राम बीज की प्रति हैक्टेयर आवश्यकता होती है। एक ग्राम कार्बेन्डेजिम व 3 ग्राम थाईरम दवा प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें।

ग्रीष्म ऋतु में इसकी बुवाई फरवरी–मार्च तथा वर्षा ऋतु की फसल हेतु जून–जुलाई में करनी चाहिये। गर्मी की फसल के लिये बीजों को 24 घण्टे पानी में भिगोने के बाद बुवाई करें। इससे अंकुरण जल्दी एवं अच्छा होता है। गर्मी में कतार से कतार की दूरी 30 सेन्टीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 12–15 सेन्टीमीटर तथा वर्षा ऋतु में कतारों के बीच की दूरी 45–60 सेन्टीमीटर व पौधे से पौधे की दूरी 30–45 से.मी. रखनी चाहिये।

सिंचाई तथा निराई गुड़ाई

गर्मियों में 5 से 6 दिन के अन्तर पर सिंचाई करनी चाहिये। क्यारियों में निराई–गुड़ाई करें जिससे खरपतवार नहीं पनपें।

प्रमुख कीट :–

हरा तेला, मोयला एवं सफेद मक्खी

ये कीट बीमारियों को फैलाने में भी सहायक होते हैं। नियन्त्रण हेतु डाईमिथोएट 30 ई.सी. या मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. या मैलाथियॉन 50 ई. सी. दवा का एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

फली छेदक

इस कीट की लटें काफी हानि पहुंचाती हैं। कीट से बचाव के लिये फूल आने के तुरन्त बाद कार्बेरिल 50 डब्ल्यू. पी. 4 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार छिड़काव 10 से 15 दिन के अन्तराल में दोहरावें।

मूल ग्रन्थि (सूत्रकृमि)

इसके प्रकोप से पौधे की जड़ों में गांठें बन जाती हैं। पौधे पीले पड़ जाते हैं तथा उनकी बढ़वार रुक जाती है। नियंत्रण हेतु बुवाई से पूर्व 25 किलो कार्बोफ्यूरॉन 3 जी दवा प्रति हैक्टर भूमि में मिलावें। फसल चक्र अपनायें एवं बॉर्डर पर गेंदा लगायें।

प्रमुख बीमारियॉ :–

छाछ्या (पाउडरी मिल्ड्यू)

इस रोग के आक्रमण से पत्तियों पर सफेद चूर्णी धब्बे दिखाई देते हैं तथा अधिक रोग ग्रसित पत्तियां पीली पड़कर झड़ जाती हैं। रोकथाम के लिये कैराथेन एल. सी. या केलिक्सिन की 1 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी के हिसाब से 10 से 12 दिन के अन्तराल से छिड़काव करें।

जड़गलन

इस रोग की रोकथाम के लिये कार्बेण्डेजिम 2 ग्राम या टोप्सिन एम 2 ग्राम दवा प्रति किलो बीज की दर से उपचार कर बुवाई करनी चाहिये। अथवा ट्राईकोडर्मा कल्चर 2.5 किलो एवं 100 किलो गोबर की खाद 24–48 घंटे संर्वधन कर सायंकाल भुरकाव करें।

पीतशिरा मोजेक

इस रोग का फैलाव सफेद मक्खी नामक कीट से होता है। अतः इसके नियन्त्रण हेतु फूल आने से पहले तथा फूल आने के बाद मैलाथियॉन 50 ई. सी. एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार यह छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर फिर से करें।

फलों की तुड़ाई एवं उपज

फलों की तुड़ाई समय पर करना अति आवश्यक है। फलों को यदि अधिक समय तक पौधों पर रहने दिया जाता है तो उनकी कोमलता समाप्त हो जाती है और फल रेशेदार हो जाते हैं एवं उनका स्वाद खराब हो जाता है। गर्मी की फसल से लगभग 50 क्विंटल तथा वर्षा की फसल से लगभग 100 क्विंटल प्रति हैक्टर उपज प्राप्त होती है।

पृष्ठ 1 का शेष.... (कृषि एवं कृषक.....)

दिलाने, कृषि प्रसंस्करण उद्योगों को गांवों में स्थापित करने, ट्रैक्टर ट्रोली पर अनुदान देने, डिग्गी निर्माण में 2 लाख की जगह 3 लाख का अनुदान देने, हाड़ौती क्षेत्र में नहरों का आधुनिकीकरण करने, राजसमंद जिले को बागवानी जिला घोषित करने, अजमेर जिले में कुक्कुट पालन में अनुदान देने जैसे सुझाव भी रखे।

बैठक के शुरूआत में प्रमुख शासन सचिव श्री डी.बी. गुप्ता ने सभी का स्वागत करते हुए बैठक की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला।

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां "
घर बैठे वर्षभर **खेती री बातां** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि आयुक्तालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

डाक पं.सं. RJ/JPC/M-16/2012-14
आर.एन.आई – 70296/98

प्रेषक–
उप निदेशक कृषि (सूचना)
118, पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

प्रेषिति–

उपजाने के समान है उपजे अनाज का सुरक्षित भण्डारण

अनाज को बाजार भाव बढ़ने तक या आगामी जरूरतों के लिये भण्डारित करना पड़ता है। सर्वेक्षणों के अनुसार भण्डारण में कीड़ों द्वारा 2.5 प्रतिशत, चूहों द्वारा 2.5 प्रतिशत एवं नमी से 0.68 प्रतिशत हानि होती है।

गोदामों में नुकसान पहुंचाने वाले कीड़े

कीड़ों के विकास के लिए 28 से 30 डिग्री सेल्सियस तापक्रम तथा आर्द्रता 70 से 75 प्रतिशत सर्वोत्तम मानी जाती है। इनका लार्वा व प्रौढ़ अवस्थाएं ही नुकसानदायक होती हैं।

★ सूंडवाली सुरसुरी, चावल का घुनः–

यह गेहूँ, चावल, मक्का, ज्वार, धान को नुकसान पहुंचाता है।

★ इल्लीः–
इसका प्रकोप धान, चावल गेहूँ और मक्का में होता है।

★ खपराः–

इस कीट की केवल लार्वा अवस्था हानिकारक होती है। ये गेहूँ, मक्का, ज्वार, चावल, दालें, तिलहन इत्यादि को नुकसान पहुंचाता है।

★ ढोरा, दलहन भृंगः–
इसकी लार्वा अवस्था ही हानिकारक है। यह लगभग सभी साबुत दालें मटर और चना को क्षति पहुंचाता है।

★ अनाज का पतंगाः–
इस कीट की केवल लार्वा अवस्था हानिकारक होती है। यह खेतों व भण्डारों में धान, मक्का, जौ, ज्वार और गेहूँ आदि अनाजों को नुकसान पहुंचाता है।

★ गोदाम का पतंगाः–
इसकी हानिकारक अवस्था लार्वा होती है। यह गेहूँ, चावल, मक्का, ज्वार, मूंगफली, मसाले आदि को क्षतिग्रस्त करता है।

कीड़ों से भण्डारित अनाज का बचाव

अनाज को साफ करना :–

★ खलिहान साफ सुथरा हो एवं उसके पास घास–फूस, झाड़ियॉ आदि नहीं हों।

★ अनाज को गोदाम/घर में रखने से पहले अच्छी तरह साफ करें।

★ अनाज में यदि कटे/टूटे हुए दाने हों तो उन्हें छान कर अलग करें।

★ अनाज को गोदाम/घर में अच्छी तरह सुखाकर, ठण्डा करके रखें।

भण्डारण का उचित तरीका :–

★ अनाज भरने वाली बोरियां/पात्रों को अच्छी तरह साफ कर धूप में सुखा लें।

★ अनाज में किसी प्रकार की कीटनाशक औषधि नहीं मिलायें।

★ कमरे/गोदाम में लकड़ी के पट्टे/पोलीथीन शीट पहले बिछायें, उसके ऊपर अनाज की भरी हुई बोरियां रखें।

★ अनाज की बोरियों को गोदाम/कमरे की दीवारों से दूर रखें।

★ कमरे/गोदाम के रोशनदान/खिड़कियों को बरसात में न खोलें। खुले मौसम व ठण्ड के दिनों में हवा दें।

★ पुरानी बोरियों को काम में लेना हो तो उन्हें मैलाथियॉन के घोल में (एक भाग मैलाथियॉन 50 ई. सी. तथा 500 भाग पानी) 10 मिनट तक डुबोकर कीट रहित करें। डुबोने के बाद उन्हें सुखाकर अनाज भरने के काम लेवें।

निरोधक उपाय :– भण्डार में कीड़ों के प्रकोप को रोकने हेतु एक लीटर मैलाथियॉन 50 ई. सी. दवा को 100 लीटर पानी में घोलकर, 3 लीटर घोल प्रति 100 वर्ग मीटर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर गोदाम की दीवारों एवं फर्श पर छिड़काव करें। भण्डार में बोरियों, दीवारों और फर्श पर छिड़काव करने से रेंगते हुए कीड़े भी मर जाते हैं।

कीड़े लगने पर रासायनिक उपचार

अनाज के भण्डारण के समय तथा बाद में कीड़े लगने पर एल्यूमीनियम फॉस्फाइड से प्रधूमन (फ्यूमीगेशन) करें। यह दवा 12 ग्राम की गोली के रूप में हवा बंद पाऊच एवं 10 ग्राम चूर्ण के पाऊच में आती है। इसका प्रयोग एक–दो गोली प्रति टन या 3 ग्राम चूर्ण प्रति टन खाद्यान्न की दर से किया जाता है।

कमरे/गोदाम का प्रधूमन :–
कमरे/गोदाम में रखे अनाज के प्रधूमन करने के लिए यदि पोलीथीन की चादर उपलब्ध हो तो अधिक उपयुक्त रहता है। बोरियों पर दवा की गोलियां चारों तरफ समान रूप से रखकर पोलीथीन शीट की चादर चारों तरफ से इस प्रकार डालनी चाहिए कि किनारा जमीन पर फैला रहे, जिसे मिट्टी/मिट्टी मिले गोबर से बंद कर हवा बंद कर देना चाहिए। यदि पोलीथीन की चादर उपलब्ध नहीं है तो कमरे/गोदाम की खिड़की, रोशनदान आदि को कागज चिपकाकर हवा बंद कर देना चाहिए एवं दरवाजे से सभी तरफ समान रूप से दवा डालकर दरवाजे को भी कागज चिपकाकर 7 दिन के लिए बंद कर देना चाहिए। 7 दिन बाद कमरा/गोदाम खोल कर हवा लगा देनी चाहिए।

गोदाम में चूहों की रोकथाम :–

★ रासायनिक नियंत्रण : चूहों के लिए विषयुक्त चुग्गा बनाने के लिए जिंक फास्फाईड दवा 1 भाग, आटा या टुकड़े किये हुए अनाज के दाने 47 भाग एवं 2 भाग तेल लेवें और पतली डण्डी से अच्छी तरह मिलाकर गोलियां बनालें। प्रत्येक बिल में एक केक (गोली) डाल देनी चाहिए। केक रखने का कार्य सायंकाल में करना चाहिए।

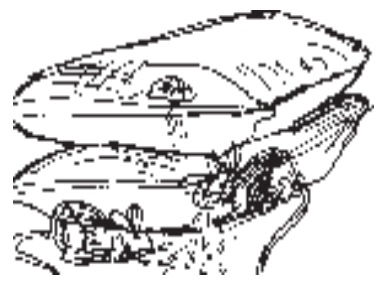

पृष्ठ 1 का शेष.....(इजरायल अध्ययन.....)

के साथ–साथ लवणीय जल के कृषि में उपयोग के संबंध में इजरायल से सहयोग के बारे में गंभीरता से विचार हुआ।

दल के अधिकारी व प्रगतिशिल कृषकों ने वहां आधुनिक सिंचाई पद्धति, जल की गुणवत्ता व लवणीयता के मानक, लवणीय जल से फसल उत्पादन, खजूर उत्पादन, मत्स्यपालन खुले खेतों में संरक्षित स्थितियों में सघन सब्जी उत्पादन, नींबू वर्गीय बगीचों में फलोत्पादन एवं नर्सरी भ्रमण, रानाना वाटर कॉपरेटिव वेस्ट वाटर ट्रीटमेंन्ट प्लान्ट, ग्रीन हाउसेज में वाटर री–साइकिलिंग, शेरोन क्षेत्र में डेयरी फार्म आदि स्थानों का अवलोकन किया।

प्रगतिशील कृषकों का मानना था कि इजरायल के इन कृषि कार्यकलापों व विधियों को यदि राज्य में अमल में लाया जाए तो कृषि उत्पादन में आशातीत वृद्धि की जा सकती है। इजरायल में कृषि की आधुनिकतम तकनीक अपनाए जाने के साथ–साथ जल प्रबन्धन के बेहतरीन कार्य हो रहे हैं।'' विशेष बात यह है कि इजरायल के किसान साधन सम्पन्न व तकनीकी रूप से तो सुदृढ़ तो हैं ही लेकिन कार्य के प्रति इनका समर्पण, परिश्रम और अनुशासन उन्हें उत्कृष्ट बनाता है।

परख

फरवरी, 2012 के अंक में पूछे गये द्वितीय प्रश्न का सही जवाब है–

प्रश्न : बाजरा चरी की किस्मों के नाम बताएं।

उत्तर : राज बाजरा चरी, राजको, जायन्ट, एल–72, एल–74

(कृषकों से सही उत्तर प्राप्त नहीं होने के कारण विजेताओं के नाम घोषित नहीं किये गये हैं।)

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 जैतून में कितना प्रतिशत तेल होता है?

प्र.2 भिण्डी की दो उन्नत किस्मों के नाम बतायें।

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के जवाब इस पते पर : उपनिदेशक कृषि (सूचना), कमरा नम्बर 118, पंत कृषि भवन, जयपुर 302005

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक आयुक्त कृषि, कृषि विभाग राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक	– श्री भवानी सिंह देथा
सम्पादक	– श्री हीरेन्द्र शर्मा
सह सम्पादक	– कु. पूनम चौधरी
परामर्श	– श्री के. आर. यादव
डिजाइन	– श्री आर. मैसी